Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.shisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 3
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

आधुनिकीकरण एवं महिला वृद्धजन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ सारिका दीक्षित
प्रोफेसर, डीन, रजिस्ट्रार, महात्मा गॉधी विश्वविद्यालय मेघालय
श्री अरूणेन्द्र प्रताप सिंह
शोधार्थी, महात्मा गॉधी विश्वविद्यालय मेघालय

Article Info

Accepted : 01 May 2025

Published : 20 May 2025

Publication Issue :

May-June-2025

Volume 8, Issue 3

Page Number : 112-124

सारांश – 'आधुनिकीकरण एवं महिला वृद्धजन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन' विषयक यह शोध समाज में हो रहे तीव्र परिवर्तनों और उनके प्रभावों को महिला वृद्धजन के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है। आधुनिकता जहाँ एवं जोर तकनीकी प्रगति, शहरीकरण, शिक्षा और संचार के नये साधनों को जन्म देती है। वहीं दूसरी ओर यह पारंपरिक समाजिक संरचनाओं, मूल्यों और संबंधों को भी प्रमाणित करती है। इस प्रक्रिया में महिला वृद्धजन की स्थिति विशेष रूप से संवेदनशील बन जारी है, क्योंकि वे एक ओर पारंपरिक संस्कृति की संवाहक होती है और दूसरी ओर उन्हें बदलते समाजिक परिवेश में स्वयं को ढालने की चुनौती भी झेलनी पड़ती है। आधुनिकीकरण के प्रभाव स्वरूप संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन, पीढ़ियों के बढ़ती दूरी, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक उपेक्षा की भावना महिला वृद्धजनों को प्रभावित करती है। तकनीकी साक्षरता की कमी के कारण वे डिजिटल दुनिया से करती जा रही है, जिससे उनकी सामाजिक सहभागिता में कमी आई है वही दूसरी और शिक्षा, जागरूकता और कुछ हद तक सरकारी योजनाओं के प्रभाव से कुछ महिला वृद्धजन आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी प्रयासरत है।

इस समाजशास्त्रीय अध्ययन में मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर जिले की 300 महिला वृद्धजनों के अनुभवों, भावनाओं और सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश वृद्ध महिलाएं अकेलेपन, उपेक्षा और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रही है हालांकि कुछ महिलाएं सामाजिक संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों से जुड़कर अपनी भूमिका को फिर से परिभाषित कर रही है। अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण महिला वृद्धजनों के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों लेकर आया है जहाँ एक ओर यह सामाजिक विघटन और भावनात्मक दूरी का कारण बना है, वही दूसरी ओर

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

इसने आत्मनिर्भरता, जागरूकता और सशक्तिकरण के नए द्वार भी खोले है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज, सरकार और परिवार मिलकर महिला वृद्धजनों के लिए ऐसा परिवेश निर्मित करे जिसमें वे सम्मानपूर्वक सुरक्षित और सक्रिय जीवन व्यतीत कर सकें।

मुख्य शब्द :– आधुनिकीकरण तकनीकी साक्षरता, पारंपरिक संस्कृति, सामाजिक विघटन, सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता।

प्रस्तावना – समाज एक जीवंत इकाई है जो समय के साथ निरंतर परिवर्तित होता रहता है। इन परिवर्तनों की प्रक्रिया को ही हम आधुनिकीकरण के नाम से जानते है। यह प्रक्रिया न केवल भौतिक और तकनीकी क्षेत्रों तक सीमित है, बल्कि यह सामाजिक संबंधो, सांस्कृतिक मूल्यों, पारिवारिक संरचनाओं तथा जीवन शैली के विविध आवासो को भी प्रभावित करती है। आधुनिकता का यह प्रभाव समाज के सभी वर्गो पर परिलक्षित होता है किंतु समाज के कुछ वर्ग जैसे – वृद्धजन, विशेषकर महिला, वृद्धजन इस परिवर्तन से अधिक प्रभावित होते है। यह वर्ग पारंपरिक समाज की मूल संरचना में केन्द्रीय भूमिका निभाता रहा है, किंतु आधुनिकता की तेज गति ने इसकी स्थिति को चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

भारतीय समाज परंपरागत रूप से संयुक्त परिवार परस्पर सहयोग वृद्धजनों के प्रति सम्मान और सामूहिक निर्णयो की संस्कृति से युक्त रहा है। वृद्ध महिलाएं परिवार की संस्कार वाहिका, आशीर्वाद दागी और अनुभव का प्रतीक मानी जाती थी। उनके पास निर्णय की शक्ति, पारिवारिक नीति निर्धारण में सहभागिता और भावनात्मक सुदृढ़ता की भूमिका होती थी, किंतु जैसे–जैसे आधुनिकरण की प्रक्रिया ने गति पकड़ी, इन भूमिकाओ में धीरे–धीरे कमी आने लगी। समाज में व्यक्तिवाद, उपभोगक्तावाद, नगरीकरण एवं तकनीक विकास के कारण सामाजिक संरचनाओं का पुनः निर्माण हुआ, जिससे वृद्ध महिलाओं की पारंपरिक स्थिति में गिरावट आई। आधुनिकता के परिणाम स्वरूप संयुक्त परिवार प्रणाली का दास हुआ और एकल परिवारों का उदय हुआ। संताने, शिक्षा, रोजगार या जीवनशैली की दृष्टि से अन्य शहरो या देशी में प्रवास करने लगी। वृद्ध महिलाएँ जो पहले परिवार की धरी थी, अब सामाजिक और भावनात्मक दृष्टि से अकेली होती चली गई । वृद्धावस्था में शरीरिक दुर्बलता, आर्थिक निर्भरता और मानसिक असुरक्षा जैसे कारकों ने उनकी स्थिति की और भी जटिल बना दिया।

एक ओर जहां आधुनिक तकनीकि सुविधाओं, चिकित्सा सेवाओ और संचार साधनों में वृद्धि हुई है, वही दूसरी ओर महिला वृद्धजन के लिए इन सुविधाओं का उपयोग एक चुनौती है। डिजिटल साक्षरता की कमी, सामाजिक सहभागिता के अवसरों में गिरावट और बदलती जीवनशैली की अनभिज्ञता के कारण वे स्वयं को समाज से करता हुआ महसूस करती है। यह परिस्थिति न केवल उनकी सामाजिक स्थिति को कमजोर करती है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य और आत्मसम्मान पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। महिला वृद्धजन दोहरे भेदभाव का शिकार होती है – एक ओर वे वृद्ध है, दूसरी ओर वे महिलाएं है (जीवन भर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने के बाद भी वृद्धावस्था में उन्हें अपेक्षित सम्मान, सुरक्षा और सहभागिता नहीं मिलती। आर्थिक रूप से आश्रित रहने के कारण वे निर्णय प्रक्रिया से बाहर हो जाती है पेंशन, संपत्ति अधिकार, स्वास्थ्य बीमा तथा सरकारी योजनाओं की सीमित पहुंच उन्हें और अधिक असहाय बना देती है।

वर्तमान शोध ''आधुनिकीकरण एवं महिला वृद्धजन एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' इंदौर जिले के परिप्रेक्ष्य में इन समस्याओं और परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। इंदौर मध्यप्रदेश का प्रमुख नगरीय केन्द्र होने के कारण आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का जीवंत उदाहरण है यहां पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार की सामाजिक व्यवस्थाएं सह–अस्तित्व में है। इस संदर्भ में यह अध्ययन विशेष इस से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह महिला वृद्धजन की स्थिति को एक मिश्रित सामाजिक–आर्थिक परिवेश में परखने का अवसर प्रदान करता है। यह शोध यह जानने का प्रयास करेगा कि इंदौर जिले की महिला वृद्धजन आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को कैसे अनुभव करती है। क्या वे इसे अवसर के रूप में देखती है या चुनौती के रूप में ? क्या आधुनिक संसाधनो ने उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार किया है या उन्हें और अधिक उपेक्षित बना दिया है? क्या सामाजिक, पारिवारिक और संस्थागत स्तर पर उनके लिए कोई सशक्तिकरण की संभावना है। इन सभी प्रश्नों का उत्तर समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से खोजा जाएगा।

समाजशास्त्र इस अध्ययन को गहराई से समझने में सहायता करता है, क्योंकि यह केवल सांख्यिकीय तथ्यों की बात नहीं करता, बल्कि सामाजिक संबंधो, भूमिकाओं और मान्यताओं के भीतर दिये अर्थो को उजागर करता है। यह शोध पत्र मात्र आंकड़ो का संकलन नहीं है, बल्कि एक संवेदनशील और माननीय दृष्टिकोण से महिला वृद्धजनों के जीवन के अनुभवों को समझने का प्रयास है। इस अध्ययन का उद्देश्य केवल समस्याओं की पहचान करना नहीं है, बल्कि यह जानने का प्रयास है कि समाज परिवार और राज्य की क्या भूमिका हो सकती है, जिससे महिला वृद्धजन सम्मानपूर्वक सुरक्षित और गिरमामयी जीवन जी सके। इस शोध के निष्कर्ष नीति–निर्माताओ, सामाजिक संगठनो और स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए दिशा निर्देश सिद्ध हो सकते है।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में आधुनिकीकरण – आधुनिकीकरण एक जैसा समाजशास्त्रीय प्रक्रिया है जिसके माध्यम से पारंपरिक समाजो में आर्थिक, समाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्रों में परिवर्तन आता है। यह प्रक्रिया सामाजिक संरचनाओं, मूल्यों मान्यताओं और जीवनशैली में व्यापक बदलाव जाती है। विशेष रूप से यह प्रक्रिया पारंपरिक सोच से हटकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, व्यक्ति केन्द्रियता और प्रगति शीलता की ओर अग्रसर होती है। समाजशास्त्र में आधुनिकीकरण का परिवर्तन की उस दिशा के रूप में देखा जाता है जो समाज को परंपरागत स्थिति से आधुनिक, औद्योगिक और नगरीय संरचना की ओर ले जाती है।

प्रमुख समाजशास्त्रियों द्वारा दी गई परिभाषाएं :–

1. विलियम ओगबर्न :– आधुनिकीकरण में तकनीकी परिवर्तन तथा उससे जुड़े सामाजिक एवं सांस्कृतिक समायोजन शामिल होते है।

2. एलेक्स इन्केल्स :– एक आधुनिक व्यक्ति नए अनुभवो के लिए खुला होता है, परिवर्तन के लिए तैयार करता है।

3. हाल्कर पारसंस :– आधुनिकीकरण समाज में संस्थागत परिवर्तन की प्रक्रिया है, जिससे पारंपरिक संस्थाएं आधुनिक औद्योगिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित या प्रतिस्थापित होती है।

4. कैनियल लरनर :– आधुनिकीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अध्यय से पारंपरिक समाज शहरीकरण साक्षरता, संचार माध्यमो में भागीदारी और सामाजिक गतिशीलता के द्वारा आधुनिक समाजों में बदलते है।

5. एंथनी गिडेन्स :– आधुनिकता सामाजिक जीवन या संगठन के उन रूपों को संदर्भित करती है जो सत्रहवी सदी के बाद यूरोप में उभरे और जिन्होंने बाद में वैश्विक प्रभाव प्राप्त किया।

साहित्य की समीक्षा :– (लेरनर, डैनियल 1958) डैनियल लेरनर ने अपने शोध 'द पासिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसायटी'' में यह स्पष्ट किया कि आधुनिकी करण के साथ–साथ व्यक्ति की सोच, जीवनशैली और सामाजिक संबंधी में भी परिवर्तन आता है। इन सिद्धांतो ने यह आधार तैयार किया कि आधुनिकीकरण केवल तकनीकी विकास नहीं, बल्कि सामाजिक पुनरचना की प्रक्रिया है।

(पटेल, इला 2005) वृद्ध महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से जटिल होती है क्योकि वे लिंग आधारित भेदभाव के साथ–साथ वृद्धावस्था से जुड़ी समस्याओ का भी सामना करती है इला पटेल ने अपने शोध ''द कन्ट्रक्प्रेरी वूमेन मूवमेंटे इन इंडिया'' में यह बताया कि वृद्ध महिलाओं से सामाजिक और पारिवारिक संरचनाओं में सबसे अधिक उपेक्षित किया जाता है।

(शर्मा के. एन. 1992) इन्होंने अपने शोध ''एजिंग इन इंडिया चैलेजेंस एण्ड रिस्पास'' में बताया कि कैसे समाज में वृद्धजन की भूमिका सीमित होती जा रही है। और वे हाशिये पर धकेले जा रहे है।

(प्रो. उपाध्याय, आर. के. 2011) ''चेंजिग फैमिली स्ट्रक्चर इन इंडिया एण्ड इट्स इम्पैक्ट और एल्डर्ली'' शोध में बताया कि परिवार की संरचना में आए परिवर्तनों – जैसे एकल परिवारों का उदय, प्रवासन और पीढ़ियों के बीच विवाद की कमी ने महिला वृद्धजनों को भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर अकेला बना दिया है।

(प्रो. नागला, बी. के.) बी. के. नागला ने अपने शोध सोशल कैपिटल एण्ड खल्डर्ली वूमेन इन इण्डिया में बताया कि सामाजिक पूंजी अर्थात् पारिवारिक, सामुदायिक और संस्थागत सहयोग वृद्ध महिलाओं के जीवन की गणवत्ता तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन का उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. यह जानना कि आधुनिकीकरण का वृद्ध महिलाओं के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा।
2. पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन
3. महिला वृद्धजनो की जीवन गुणवत्ता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक स्थिति का विश्लेषण
4. वृद्ध महिलाओ में पारंपरिक रूढ़िओ और आधुनिक सोच के मध्य सामंजस्य का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र – प्रस्तुत अध्ययन मध्यप्रदेश के महानगर एवं आर्थिक राजधानी इंदौर के विशेष संदर्भ में।

अध्ययन विधि –प्रस्तुत अध्ययन वर्णात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध संरचना के अंतर्गत किया गया है।

अध्ययन प्रविधि एवं तकनीक :– प्रस्तुत अध्ययन में निम्न प्रविधि एवं तकनीकों का योग किया गया है।

1. निदर्शन
2. साक्षात्कार अनुसूची
3. असहयोगी अवलोकन
4. प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग

अनुसंधान क्रिया विधि – इस शोध अध्ययन में इंदौर नगर के शहरी व अर्द्धशहरी क्षेत्रों में निवासरत 300 वृद्ध महिलाओं को शामिल किया गया है जिनकी उम्र 58 वर्ष या उससे अधिक है। इस अध्ययन में उन समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है जो इस अधुनिकता के दौर में एक वृद्ध महिला अपने वृद्धावस्था के दौरान सामना करती है। इस अध्ययन के दौरान सभी वृद्ध महिलाओ को पूर्णरूप से आश्वासित किया गया कि यह समस्त जानकारी व्यक्तिगत और

गोपयनीय रखी जायेगी। प्राप्त हुयें आंकड़ो को गणना और मूल्यांकन करने के लिए सांख्यिकीय उपकरण का प्रयोग किया गया है। शोध के परिणामो का विवरण संख्या और प्रतिशत दोनों में किया गया है।

डेटा विष्लेषण

तालिका–1

महिला वृद्धजनों की आयु वर्ग

क्र	उत्तर दाताओं की आयु	संख्या	प्रतिशत
1	58–68	165	55
2	69–79	75	25
3	80 से ऊपर	60	20
	कुल	300	100

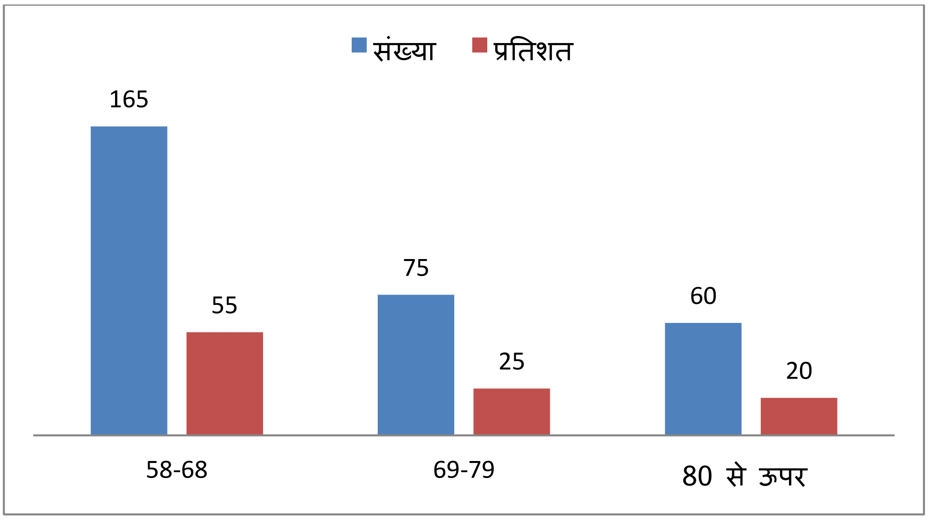

उपरोक्त तालिका में उत्तरदाताओं की आयु के संदर्भ में तथ्य दर्षाये गए है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि सर्वाधिक 55 प्रतिषत महिलाएं (58–68) आयु वर्ग में आती है, 25 प्रतिषत महिलाएं (69–79) आयु वर्ग की है और न्यूनतम 20 प्रतिषत महिलाएं 80 वर्ष से ऊपर है।

तालिका–2

वृद्ध महिलाओं की वैवाहिक स्थिति

क्र	वैवाहित स्थित	संख्या	प्रतिशत

1	विवाहित	105	35
2	अविवाहित	15	05
3	विधवा	180	60
	कुल	300	100

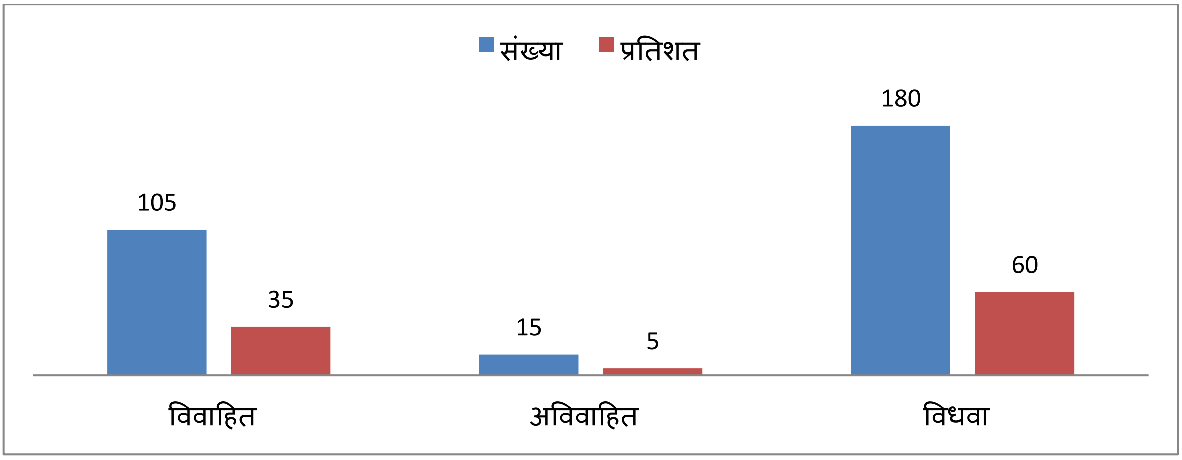

तलिका संख्या(2) उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति से संबंधित है तालिका से ज्ञात होता कि सर्वाधिक 35 प्रतिषत उत्तरदाता विवाहित है, 5 प्रतिषत अविवाहित है, सर्वाधिक 60 प्रतिषत विधवा महिलाएं है।

तालिका–3

वृद्ध महिलाओं का संबंधित धर्म/पंथ

क्र	**धर्म/पंथ**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1	हिन्दू	183	61
2	मुस्लिम	81	27
3	इसाई	36	12
4	अन्य	0	0
	कुल	300	100

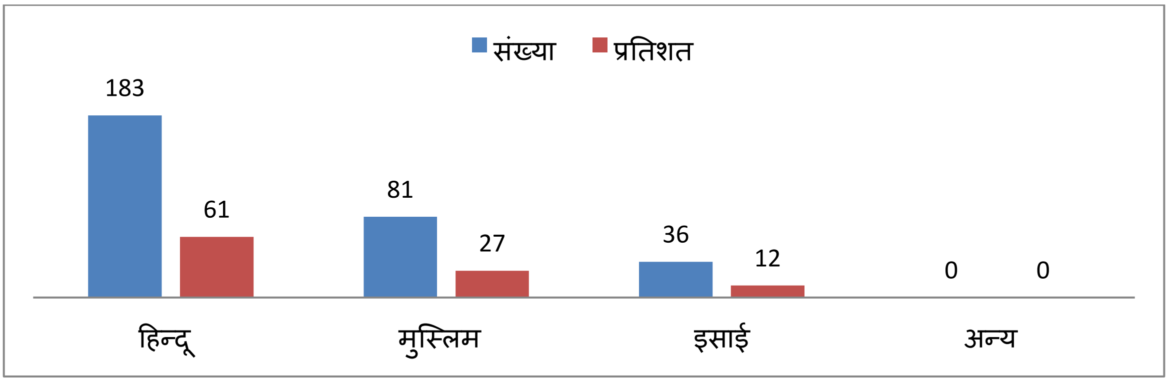

तलिका संख्या (3) में उत्तरदाताओं की धर्म/पंथ से संबंधित आंकड़े प्राप्त होते है। तालिका के अनुसार सर्वाधिक 61 प्रतिषत महिलाएं हिंदू /पंथ, 27 प्रतिषत महिलाएं मुस्लिम धर्म/पंथ, 12 प्रतिषत इसाई धर्म/पंथ एवं अन्य का 0 प्रतिषत है।

तालिका–4

आधुनिक तकनीक का उपयोग

क्र	**आधुनिक तकनीकि**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1	उपयोग करती है।	180	60
2	उपयोग नहीं करती है।	90	30
3	पता नहीं है।	30	10
	कुल	300	100

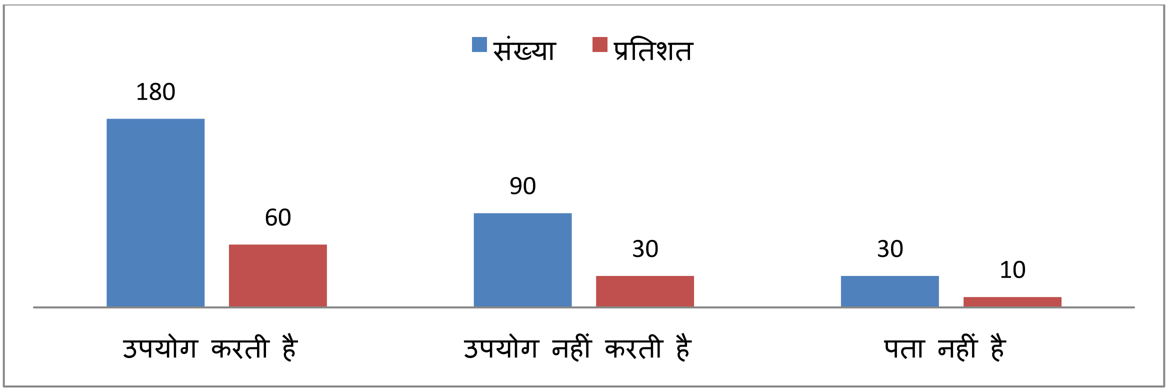

तालिका संख्या (4) में आधुनिक तकनीकि का उपयोग से संबंधित आंकड़े प्राप्त होते है जिसमे 60 प्रतिषत महिलाएं आधुनिक तकनीकि का उपयोग करती है। जबकि 30 प्रतिषत महिलाएं नहीं करती है।

तालिका–5

वृद्ध महिलाओं में शिक्षा स्तर

क्र	शैक्षणिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	निरक्षर	24	8
2	प्राथमिक	168	56
3	माध्यमिक	63	21
4	स्नातक / उच्चतर	45	15
	कुल	300	100

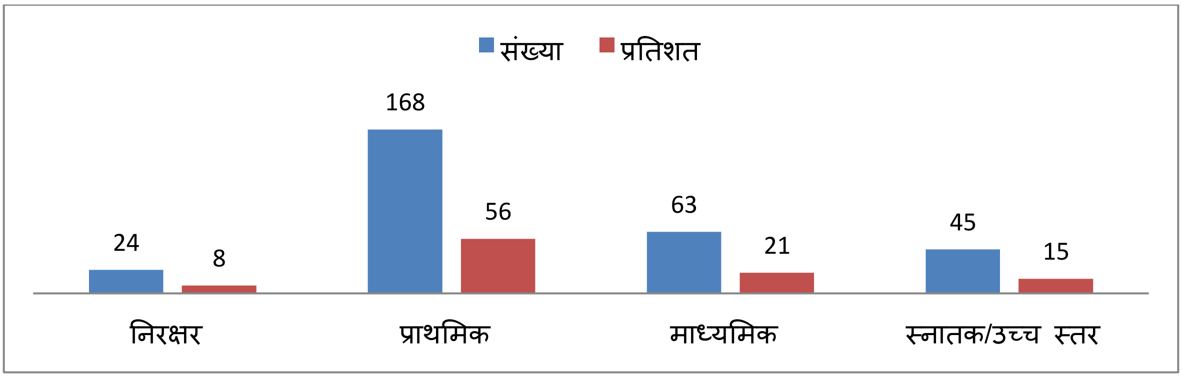

तलिका संख्या (5) वृद्ध महिलाओं में शिक्षा स्तर संबंधित जानकारी प्राप्त होती है जिसमें सर्वाधिक 65 प्रतिषत वृद्ध महिलाए प्राथमिक स्तर तक कि शिक्षा, 21 प्रतिषत वृद्ध महिलाएं माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा, 15 प्रतिषत वृद्ध महिलाएं स्नातक / उच्चतर स्तर तक की शिक्षा तो वही 8 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं निरक्षर है।

तालिका–6

आधुनिक उपकरणों का उपयोग

क्र	उपकरण	उपयोग करती	नहीं करती है	संख्या
1	मोबाइल	210	90	300
2	इंटरनेट	90	210	300
3	सोशल मीडिया	60	240	300
4	ई–कामर्स	15	285	300

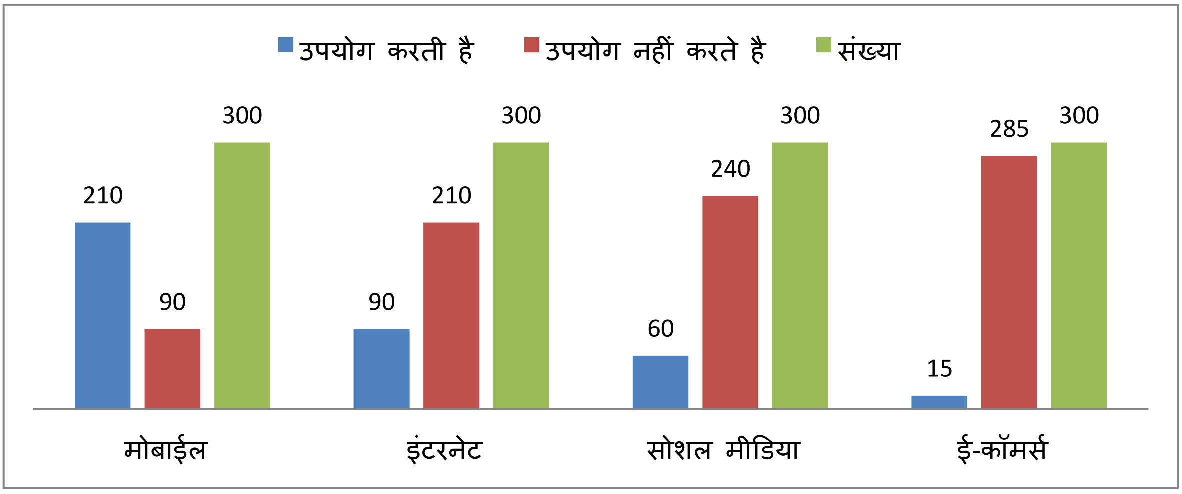

तालिका संख्या (6) वृद्ध महिलाओं के द्वारा आधुनिक उपकरणों के उपयोग संबंधी तथ्यों को प्रस्तुत करती है जिसमें सर्वाधिक 210 वृद्ध महिलाएं मोबाइल का उपयोग करती है, 90 वृद्ध महिलाएं इंटरनेट, 60 वृद्ध महिलाएं सोशल मीडिया का जबकि ई–कामर्स का उपयोग करने वाली वृद्ध महिलाओं की संख्या मात्र 15 है।

तालिका–7

वृद्ध महिलाओं की आर्थिक निर्भरता

क्र	**आय का स्त्रोत**	**संख्खा**	**प्रतिशत**
1	पेशन	135	45
2	परिवार से सहयोग	90	30
3	स्वयं की बचत	45	15
4	कोई स्त्रोत नहीं	30	10
	कुल	300	100

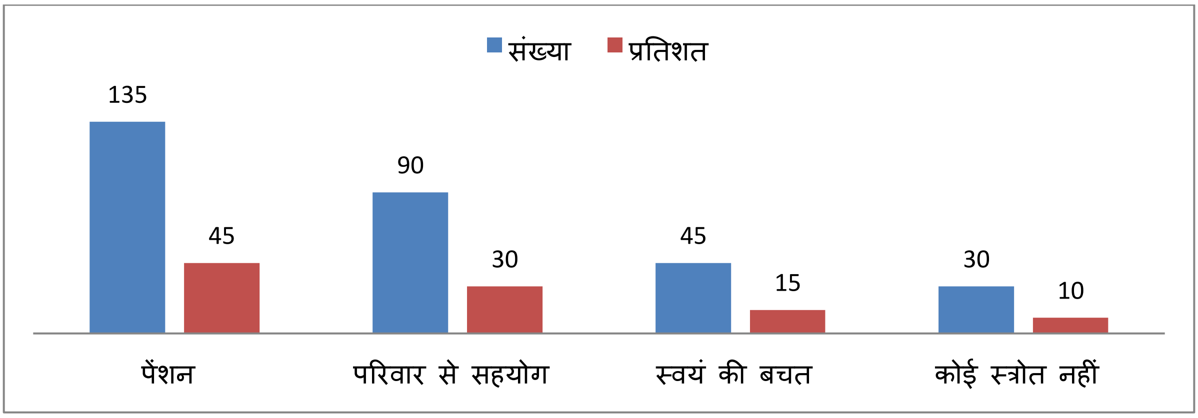

तालिका संख्या (7) वृद्ध महिलाओं की आर्थिक निर्भरता को प्रदर्षित करती है जिसमे सर्वाधिक 45 प्रतिषत वृद्ध महिलाएं पेशन भोगी, 30 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं को परिवार से सहयोग, 15 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं स्वयं की बचत है जबकि 10 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं की आय का कोई स्त्रोत नहीं है।

तालिका–8. मानसिक स्थिति एवं अकेलापन

क्र	मनसिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	खुश व संतुष्ट	124	38
2	कभी कभार अकेलापन	75	25
3	नियमित उदासी	75	25
4	डिप्रेशन की स्थिति	26	12
	कुल	300	100

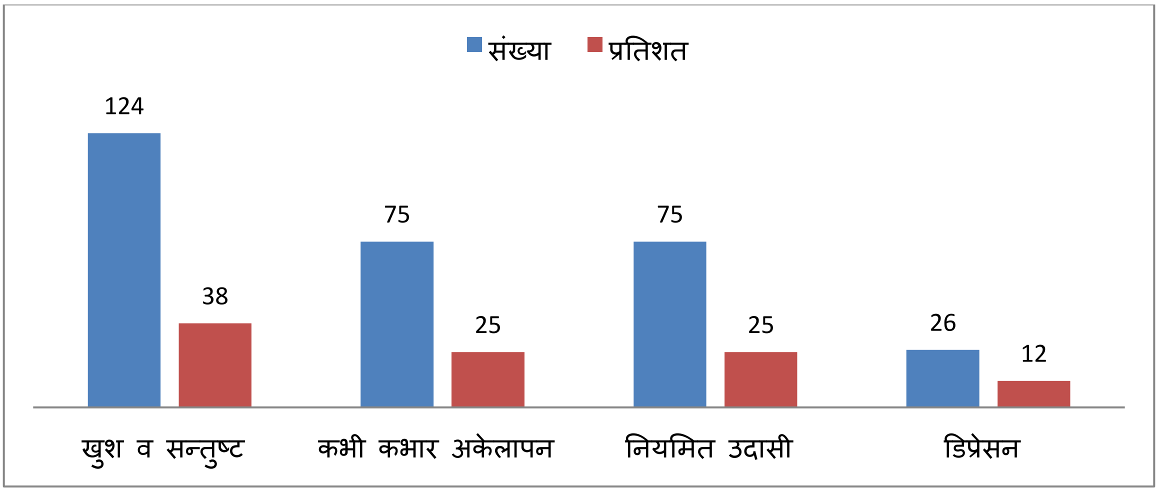

तालिका संख्या (8) वृद्ध महिलाओ की मानसिक स्थिति एवं अकेलापन के कारण संबंधी आंकड़े प्रस्तुत करती है। जिसमें 38 प्रतिषत वृद्ध महिलाएं खुश व संतुष्ट है, 25–25 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं क्रमशः कभी कभार अकेलापन, नियमित उदासी अनुभव करते है। तो 12 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं डिप्रेशन की स्थिति में है।

तालिका–9. परिवार के साथ संबंधो में बदलाव

क्र	परिवारिक संबंध	संख्या	प्रतिशत
1	पहले अच्छे थे	210	70
2	पहले कम थे	0	0
3	अब अच्छे है	30	10
4	अब कम है	60	20
	कुल	300	100

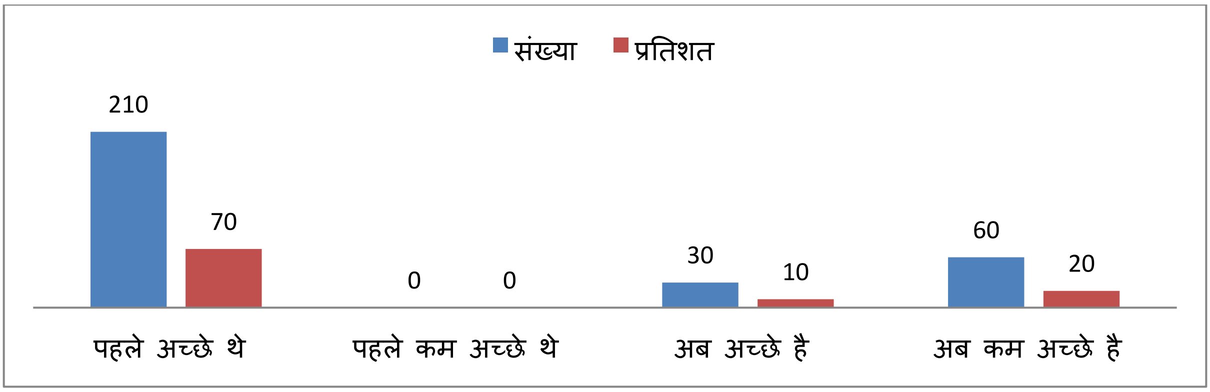

तालिका संख्या (9) वृद्ध महिलाओं का परिवार के साथ संबंधों में बदलाव संबंधी आंकड़ो को प्रदर्षित करती है जिसमें 70 प्रतिषत वृद्ध महिलाओं का परिवार के साथ पहले अच्छे संबंध थे, 10 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं का परिवार के साथ अब अच्छे संबंध है, 20 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं का अब संबंध कम है।

तालिका–10

आधुनिकीकरण से प्रभावित क्षेत्र

क्र	क्षेत्र	प्रभाव			संख्या
		अधिक	मध्यम	कम	
1	पारिवारिक संबंध	210	60	30	300
2	धार्मिक जीवन	90	120	90	300
3	समाजिक सहभागिता	180	60	60	300
4	पोशाक एवं रहन–सहन	210	60	30	300

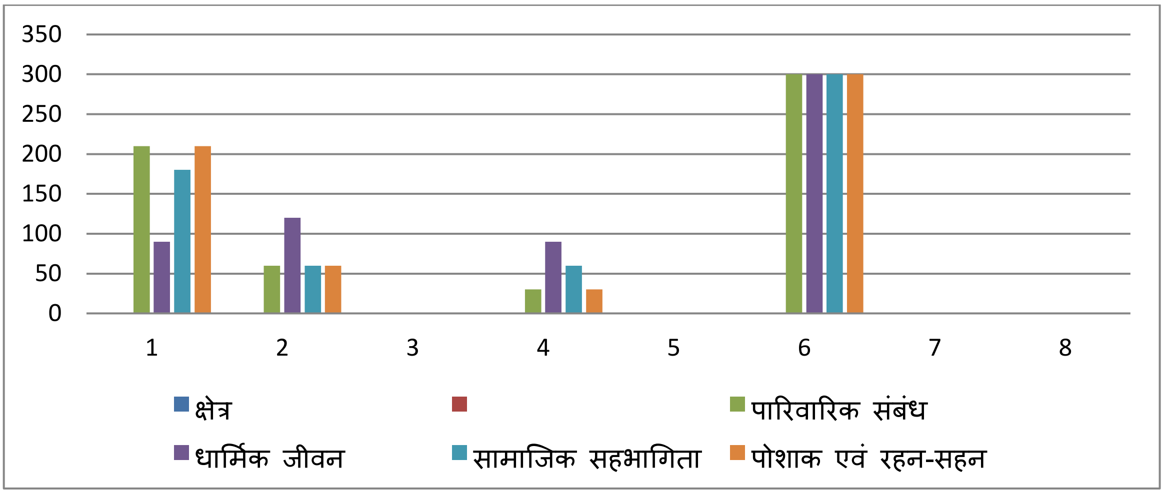

तालिका संख्या (10) वृद्ध महिलाओ का आधुनिकीकरण से प्रभावित क्षेत्र के प्रति सोच को प्रदर्षित करती है जिसमें 210 वृद्ध महिलाओ का मानना है की पारिवारिक संबंध प्रभावित हुए है, 90 वृद्ध महिलाएं धार्मिक जीवन, 180 सामाजिक सहभागिता व 210 पोशाक एवं रहन–सहन को प्रभावित क्षेत्र मानती है।

तालिका–11

आधुनिक सोच के साथ सामंजस्य

क्र	सामंजस्य	संख्या	प्रतिशत
1	कर पा रही है	126	42
2	नहीं कर पा रही है	174	58
	कुल	300	100

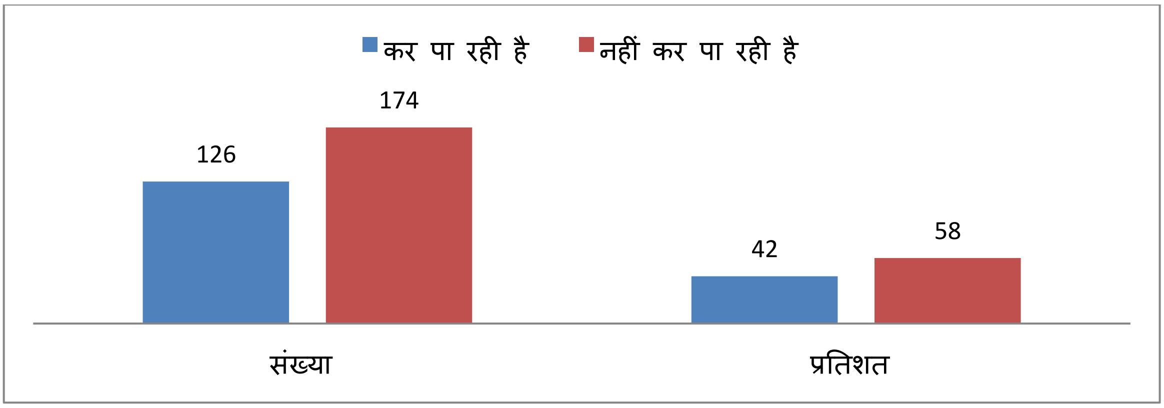

तालिका संख्या (11) वृद्ध महिलाओ का आधुनिक सोच के साथ सामंजस्य संबंधित आंकड़ो को प्रदर्षित करती है जिसमें सर्वाधिक 174 वृद्ध महिलाएं सामंजस्य नहीं कर पा रही है तो वही 126 वृद्ध महिलाओं का मानना है कि वे आधुनिक सोच के साथ सामंजस्य कर पा रही है।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध ''आधुनिकीकरण एवं महिला वृद्धजन एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि आनुनिकीकरण की प्रक्रिया ने समाज के विविध स्तरो पर गहरा प्रभाव डाला है, और इसका सबसे अधिक संवेदनशील असर महिला वृद्धजनों पर पड़ा है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष इस ओर संकेत करते है कि पारंपरिक समाजो में जहां वृद्ध महिलाओं को सम्मान, सुरक्षा और पारिवारिक सहयोग प्राप्त था, वहीं आधुनिक समाज में वे उपेक्षित अकेली और कई बार बोझ की तरह देखी जाने लगी है। इंदौर जिले में किए गए इस शोध में यह सामने आया कि आधुनिकता ने महिलाओं के जीवन में सुविधाएं तो दी है, लेकिन साथ ही साथ उनसे सामाजिक सहभागिता, पारिवारिक संरक्षण और भावनात्मक सुरक्षा भी छीन ली है। अधिकांश महिला वृद्धजन इस परिवर्तन को समझने या उससे सामंजस्य बैठाने में कठिनाई महसूस करती है। सकारात्मक पक्ष यह है कि कुछ शिक्षित और आत्मनिर्भर महिला वृद्धजन आधुनिकता को एक अवसर के रूप में भी देखती है। वे सामाजिक संगठनों से जुड़ रही है, स्वयंसेवी कार्यो में भाग ले रही है और तकनीकी साक्षरता प्राप्त कर सामाजिक संवाद बनाए रखने का प्रयास कर रही है। इससे यह संकेत मिलता है कि यदि उचित संसाधन, सहयोग और प्रशिक्षण मिले तो महिला वृद्धजन आधुनिक समाज में भी सक्रिय और गरिमापूर्ण जीवन जी सकती है। अंततः यह शोध यह स्थापित करता है कि आधुनिकीकरण अनिवार्य और अपरिहार्य प्रक्रिया हैं परंतु इसकी दिशा और प्रभाव को नियंत्रित कर महिला वृद्धजनों के लिए एक समावेशी, सम्मानजनक और सुरक्षित वातावरण तैयार किया जा सकता है। समाज का प्रगति तभी सार्थक मानी जाएगी जब उसमें वृद्ध महिलाएं भी समान गरिमा के साथ जीवन व्यतीत कर सकें।

संदर्भ सूची :–

1. सेन, अमर्त्य. Development as Freedom. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999.
2. चक्रवर्ती, सुचित्रा. भारतीय समाज में वृद्धजन की स्थिति. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स, 2015.
3. शर्मा, के.एल. आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स, 2002.
4. भारत सरकार। वृद्ध व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, 1999।
5. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI)। भारत में बुजुर्ग – 2021, भारत सरकार।
6. हेल्पएज इंडिया। भारत में बुजुर्गों की स्थिति रिपोर्ट – 2022।
7. देसाई, नीरा, और उषा ठक्कर। भारतीय समाज में महिलाएँ. नई: दिल्ली राष्ट्रीय महिला आयोग, 2001।
8. उबेरॉय, पेट्रीसिया। भारत में परिवार, रिश्तेदारी और विवाह। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994।
9. दांडेकर, कुमुदिनी. भारत में बुजुर्ग – साज्जन फाउंडेशन, पुणे, 1996.
12. www.socialjustice.nic.in – सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय
13. www.helpageindia.org – हेल्पएज इंडिया की आधिकारिक वेबसाइट
14. भारत की जनगणना – www.censusindia.gov.in
15. वरिष्ठ नागरिकों पर राष्ट्रीय नीति – 2011, भारत सरकार।